

उपन्यास के तत्त्व

हिन्दी साहित्य में उपन्यास एक ऐसी कला है जिसमें मानव जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। कहानी के बाद में उपन्यास का विचार हुआ। कहानी और उपन्यास में ताल्लिक दृष्टि से ज्यादा अंतर नहीं है। इसके मुख्य छह तत्त्व स्वीकार किये गये हैं—

1. कथानक
2. चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन
4. धारणा
5. वातावरण
6. उद्देश्य

1. कथानक :— उपन्यास का प्रमुख तत्त्व कथानक है। इसमें संदर्भ जीवन की व्याख्या एक लंबे-चरित्र व्याख्यान के आधार पर की जाती है। कथानक के आधार पर ही पात्रों के चरित्र का गठन किया जाता है। मानव का जीवन अत्यंत जटिल होता है और उसी व्याख्या व्यापक रूप में कुछ गौण कथानक के साथ उपन्यास में सफलता से होती है। कथानक को कई हिस्सों में विभाजित किया जाता है यह लेखक पर निर्भर करता है।

2. चरित्र-चित्रण :— उपन्यास में पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इसके द्वारा कथानक में रोचकता और आकर्षण आता है। लेखक कई पात्रों के चरित्रों के द्वारा असरदार प्रदान करता है। जेमसंद जी ने लिखा है— "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और इसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"

3. कथोपकथन :— कथोपकथन भी उपन्यास का मूल तत्त्व है।

कथोपनयन के द्वारा ही उपन्यासकार अपनी बातों को निम्न-निम्न आयामों में कहकर उपन्यास को आगे बढ़ाता है। इससे पाठकों के मनोवैज्ञानिक, उसकी छद्म-वृत्ति एवं मानसिकता का पता चलता है। किन्तु के विश्लेषण से जाकों की समीक्षा होती है जिससे कथा अक्षुण्ण बन जाती है।

4. घटना :- उपन्यास में कई घटनाएँ परस्पर संबंधित होती हैं। यह उपन्यास के पाठकों के स्नायु कोड़ता है। ये सभी घटनाएँ उपन्यास को चरम सीमा तक ले जाती हैं। उपन्यासकार सभी घटनाओं को इस प्रकार से संयोजित करता है कि उसकी सर्वेदनाएँ मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक हो जाती हैं।

5. वातावरण :- उपन्यास में वातावरण भी बृहत् कथा का केन्द्र बिन्दु होता है। पाठकों के मनोस्थिति के आधार पर परिवेश एवं वातावरण को तैयार किया जाता है। यदि कथानुसार ही करना आवश्यक विशेष भी है तो उससे वातावरण को गर्म एवं शुद्ध अवश्य दिखाया जाना चाहिए। ऐसा न हो वर्णों का वातावरण तैयार कर दे।

6. उद्देश्य :- उपन्यास का मुख्य उद्देश्य भी होना चाहिए। देशकाल एवं वातावरण के जैसा ही उद्देश्य की भी प्रति की जाती है। कुछ उपन्यास ऐतिहासिकता को आधार बनाकर वर्तमान एवं भविष्य का निर्धारण करते हैं। कुछ पाठकों का अंजन करते हैं तो कुछ मनोरंजन करते हैं। कुछ में कल्पना को ही मुख्य आधार बनाया जाता है तो कुछ में सामयिक चरित्र चरना को।